बेहद का बापदादा, मीठे, सिकीलधे बच्चों से पूछ रहे हैं– राज़ी–खुशी बैठे हो? नशा ... चढ़ना चाहिए, कल्प बाद फिर से आए मात–पिता मिले हैं। बेहद का बाप, बेहद का सुख देने आए हैं, उनके सन्मुख हम बैठे हैं। यह अतीन्द्रिय खुशी रहनी चाहिए। बाप की श्रीमत से हम श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बनते हैं। अब माया रावण की मत से भ्रष्ट ते भ्रष्ट बने हैं, फिर श्रेष्ठ बनते हैं सुप्रीम बाप, सुप्रीम टीचर, सुप्रीम सत्गुरु से। बाप कहते हैं, बहुत मीठे बच्चे हैं, जो मददगार बन भारत को स्वर्ग बनाते हैं। ज़रूर जो बहुत मददगार बनेंगे वो बाप को प्रिय लगेंगे। लौकिक बाप भी सपूत बच्चों पर ही खुश होते हैं। बेहद का बाप भी कहते हैं– मीठे बच्चे, सपूत बनो। जो सपूत बच्चे मददगार बन पूरा वर्सा लेंगे वो ही मात–पिता के तख्त पर विजय पावेंगे। तुम बच्चों का ड्रामा में हीरो–हीरोइन का पार्ट है। राज्य लेते हो और गँवाते हो। तुम बच्चे पतितों को पावन बनाते हो। तुम्हारा ही यादगार मंदिर है। 7 वंडर हैं ना! जहाँ चेतन बैठे हो वहाँ ही जड़ यादगार भी है। अपन जानते हैं, ये मं(दिर) आदि सब टूट जावेंगे। बाप बच्चों को सन्मुख बैठ समझाते हैं अथवा बच्चों पास मुरली जाती है। सारा आधार मुरली पर ठहरा। सिर्फ बी०के० के आधार पर थोड़े ही ठहरना है। जैसे वो सुनकर अथवा पढ़कर सुनाती है वैसे जो अच्छे बच्चे हैं, उनको भी मुरली उठाय रिपीट करना चाहिए, फिर लिखना चाहिए– बाबा ने ऐसे समझाया, हम भी ऐसे समझाएँगे। सीख कर और सिखलाना है। प्वाइंट्स नोट करना अच्छा है। कई ब्रह्माकुमारियों के सिवाए उदास हो पड़ते हैं। बच्चों की अवस्था देखने लिए बी.के. को अदल–बदल भी करते हैं। देखते हैं, कौन मूर्छित हो जाते हैं। तुम्हारे इस समय के पुरुषार्थ की ही प्रालब्ध बनती है। तुमको इस मृत्युलोक में पुनर्जन्म अभी लेना नहीं है। पुनर्जन्म लेना ही अमरलोक में है। तुमको बड़ी भारी प्राप्ति है। इस समय के जो साहुकार हैं, सबकी साहुकारी मिट्टी में मिल जानी है। तुम बैठी देखो कैसे साधारण हो! तुम बी.के. हो ब्रह्मा की संतान। जो(तो) ज़रूर ब्रह्मा का बाप भी होगा। ब्रह्मा का बाप है– शिव। शिव का कोई बाप नहीं। तुमको नशा रहना चाहिए– हम हैं गॉड फादरली स्टूडेंट्स। गॉड फादर पढ़ाते हैं और क्या चाहिए! तुम कन्याओं का यूँ भी मान है। कुमारों का इतना नहीं। कुमारियाँ सबसे ऊँच वर्सा पाती हैं। बाप कहते हैं, मैं तुमको 21 जन्मों के लिए सुख का वर्सा देता हूँ तो ऐसे बाप को भूलना न चाहिए। लोक–लाज खोनी ही पड़े। मीरा का भी नाम है ना! भक्ति में नारद और मीरा का नाम मुख्य गिना गया है। भक्तमाल भी गाई जाती है। यह तो डबल माल है– विष्णु की माला और रुद्रमाला। ब्राह्मणों की माला बन नहीं सकती; क्योंकि रेस चल रही है। कई तो रेस में गिर भी पड़ते हैं। गिराते हैं काम विकार। पाँच मार हैं ना! काम विकार आदि–मध्य–अंत दुख देते हैं। अभी तुम पुरुषार्थ करते हो अमरलोक लिए। यह पुरानी दुनिया रहने लायक न है। अब वापिस जाना है। यह भूलना न है। बच्चों का पहला–2 फर्ज़ है बाप को याद करना तो सैदव हर्षित रहेंगे। कितनी जबरदस्त प्राप्ति है। माया के तूफानों से भी डरना न है। बच्चा बनने बाद माया खूब अच्छी रीत पछाड़ेगी; इसलिए पूरा पुरुषार्थ कर माया पर जीत पानी है। ओम् शांति।